शोध सारांश

बौद्ध धम्म के विकास में धम्मचारी लोकमित्र का योगदान

धम्मचारी लोकमित्र जी का जन्म इंग्लैंड के प्रसिद्ध मानव विज्ञानी प्रो॰ जैक गुड़ी के एकलौते पुत्र के रूप में एक अमीर ख्रीश्चन परिवार में हुआ । इनका पूर्व नाम (Jeremy Goody) जेरेमी गुड़ी था। भंते संघरक्षित ने सन् 1967 में "फ्रेंड्स ऑफ द वेस्टर्न्स बुद्धिस्ट ऑर्डर" की स्थापना इंग्लैण्ड में किया था और योगा सीखने की खोज में सन् 1971 के दरमियान भन्ते संघरक्षित जी के साथ संपर्क हुआ। जो स्वयं योग शिक्षक नहीं बल्कि ध्यान और बौद्ध जीवन धारा के गुरु थे। "सूत्र ऑफ गोल्डन लाईट" पर भंते संघरक्षित के भाषण से लोकमित्र बौद्ध धम्म की ओर आकर्षित हो गये तथा "त्रिरत्न बौद्ध महासंघ" में दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात इनका नाम जेरेमी गुड़ी से धम्मचारी लोकमित्र हो गया। इसके पाश्चात वे पूर्ण कालीन कार्यकर्ता रहे और सन् 1984 तक अनागारिक (चीवरधारी) रहे थे। प्रारम्भ के दिनो में वे "लंदन बुद्धिस्ट सेंटर" के कोष प्रभारी (खजांची) थे।

सन् 1977 में पहली बार भारत में बौद्ध स्थलो की देखने आये थे। उसी समय "अशोक विजया दशमी" के दिन नागपुर पहुँचे और वहाँ 14 ऑक्टुबर सन् 1956 को दीक्षा भूमि में बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर ने जो अपने 5 लाख अनुयाइयों के साथ धम्म क्रांति की उसकी 21वीं वर्ष गाठ थी। बाबा साहब के नाम के जयघोष करते जनसैलाब को देखा और यह देखकर प्रभावित हो गए । उनकी पहली भेंट में दो दृश्य ऐसा था कि एक- झाँसी में एक कुष्ठरोगी महिला और दूसरा मंगलोर के रास्ते पर एक महिला जिसने एक गंदे गटर में एक टूटे हुए बिस्किट को देखते ही उठा लिया और खा लिया।। भारत में आने के बाद इन दो दृश्यों ने उन्हें यहाँ रोका।

'सूत्र ऑफ गोल्डन लाईट' पर भंते संघरक्षित के भाषण में उन्हे बौद्ध आंदोलन के प्रति डॉ अंबेडकर की दृष्टि और क्षमता दिखाई देती थी और ऐसा मौका उनके जीवन में इससे पहले कभी नहीं आया था कि व्यक्तिगत और वैश्विक इस दोहरे बदलाव के लिए इससे अच्छा कोई दूसरा विकल्प उनके पास नहीं था। सन् 1978 अगस्त में वे दोबारा भारत आये और यहाँ बौद्ध धम्म के तत्वज्ञान को बाबासाहब के अनुयाइयों के बीच प्रचार-प्रसार और धम्म अभ्यास का कार्य करने हेतु उन्होने सन् 1979 जून में "त्रिरत्न बौद्ध महासंघ" की स्थापना की। तथा जो लाखों लोग धर्मांतरित हुये थे उनको भगवान बुद्ध के बारे में मुलभूत ज्ञान भी नहीं था। उनको लोकमित्र जी ने बुद्धत्व माने वास्तव में क्या है यह समझाया। जब हम कहते हैं, ''बुद्धम शरणं गच्छामि'', इसका अर्थ होता है उस तरह बनना। सम्पूर्ण मनुष्य बनना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है। इसका अर्थ यह हुआ कि बुद्ध के जैसा बनना ही एक मार्ग है, जो हमें जीवन की सच्ची शांति और सुरक्षा देगा। यद्यपि कई लोग ''बुद्धम शरणं गच्छामि'' का जाप अधिकतम करते हैं, किंतु केवल जाप करना ही काफी नहीं है। हमें इसका अर्थ भी जानना चाहिए। धर्मांतरण के समय डा. बाबासाहब आंबेडकर ने अपने अनुयाईयों को बाईस (22) प्रतिज्ञाऐं दी। इनमें से पहली कुछ प्रतिज्ञाएँ पुराने देवों पर विश्वास न करने से संबंध रखती हैं। इनमें से एक प्रतिज्ञा है, बुद्ध को देव या भगवान विष्णु का अवतार न मानना। जब हम बुद्ध से प्रार्थना करते हैं,

तब हम उन्हें प्रभावी रूप से देव बना रहे हैं, कम से कम हमारे लिए वे देव हो जाते हैं। डा. बाबासाहब आंबेडकर को इस खतरे का अनुमान था और इस पर हमें चेतावनी दी। बुद्ध को देव बनाकर हम उन्हें हमारे लिए अनुपयोगी बना रहे हैं। इस तरह हमें उनके उदाहरण को नगण्य बना रहे हैं। कई 'बुद्धं शरणं गच्छामि' दिन में कई बार कहते हैं। क्या हमने बुद्धत्व की दिशा में कोई प्रगति की है, क्योंकि हम शरणं गमन का जाप करते रहे है। इस समय के पूर्व को देखे, क्या हम परिवर्तित हुए हैं? क्या हममें वहीं पूरानी आदतों और दुर्बलता हैं या हमने द्वैष एवं लोभ को त्याग दिया है? क्या हम वैसे ही हैं, जैसे पाँच, दस या बीस वर्ष पहले थे या हमने कोई विकास किया है? अगर हमने बुद्ध में परिणामकारी शरणगमन किया है, तो शायद धीरे ही, किंतु हमारा विकास अवश्य होगा। हम इन कुशल गुणों का संचय करना प्रारंभ कर देंगे। प्राय: हमारी चेतना का स्तर बढ़ेगा। हमारी मानसिक अवस्थाऐं बदलेंगी, हमारी वाचा बदलेगी और हमारा व्यवहार बदलेगी। हम कम से कम अकुशल बनेंगे एवं अधिक से अधिकतम कुशल बनेंगे। हम संतुष्ट होंगे कि हम अर्थपूर्ण जीवन जी रहे हैं। प्राय: हम भी स्वयं को बोधिवृक्ष के नीचे पायेंगे, बुद्धत्व से पहले सिद्धार्थ की तरह।

धम्मचारी लोकमित्र जी ने बुद्ध धम्म और संघ के विषय में गहराई से भारत देश के नव बौद्धों को बताने और अचरण का अभ्यास करने का कार्य किया है। तथा यह भी समझने की कोशिश की है कि वे अपने आप को कभी दोयम दर्जे का बौद्ध न समझे क्योकि सारीपुत्र, आनंद, कश्यप और अन्य कई जन्म से बौद्ध नहीं थे, किन्तु स्वयं अपनी श्रद्धा एवं अनुभव से वे बौद्ध बने जिनका जीवन और प्रतिबद्धता अब भी पूरे विश्व के बौद्धों को 2579 वर्ष उपरांत भी प्रेरणा देता है। उन्हें दूसरे दर्जे का बौद्ध मानना कठिन है। बहुत से महान बौद्ध ऐसे हैं जो जन्म से बौद्ध नहीं थे। नागसेन और मिलिंद जिनका धम्मिक संवाद आज भी पढ़ा जाता है, वे भी परधर्मग्राही बौद्ध थे। सम्राट अशोक जैसा राजा इस विश्व ने आज तक नहीं देखा, वह भी नव बौद्ध थे। महान दार्शनिक नागार्जुन एवं बुद्ध काल से उनके महान अनुयाई आर्यदेव भी परधर्मग्राही बौद्ध थे। अधिकतर लोगों की समझ के अनुसार संघ, भिक्षुओं से बनता है और इसी से कई भ्रम उत्पन्न हुए हैं। जबकि कई भिक्षु, धम्म को गंभीरता से लेते हैं लेकिन ऐसा कहा जाता है कि कई नहीं भी लेते। फिर भी हो सकता हैं तथाकथित उपासक जो धम्म को गंभीरता से लेता है, उसे भिक्षुओं से कम स्तर का समझा जाता है। कुछ भिक्षु परिणामकारक शरणगमन करते हों किन्तु कुछ केवल आचार नीति स्तर का शरणगमन करते हैं और वे उतने प्रतिबद्ध भी नहीं होते, जितना एक परिणामकारक शरणगमन किया हुआ उपासक होता है। तब व्यक्ति के लिबास का रंग महत्त्वपूर्ण नहीं है, किन्तु उनकी प्रतिबद्धता एवं धम्म का आचरण महत्त्वपूर्ण है। उनकी यही बात परिणामकारी अर्थो में उन्हें संघ सदस्य बनाती है।

डॉ॰अंबेडकर स्पष्टता से भिक्षु एवं उपासक के बीच की दीवार गिरना चाहते थे। उनका आग्रह था कि धम्म सभी के लिए समान है, चाहे वह भिक्षु हो या उपासक। जब बौद्ध बने तो उसे धम्म को बहुत गंभीरता से लेना चाहिए और यह स्पष्ट करने के लिए उन्होंने दीक्षा संस्कार का विकास किया, जिसे 22 प्रतिज्ञाऐं कहते हैं। उन्होंने स्वयं लोगों को बौद्धधर्म की दीक्षा शरण गमन एवं शीलग्रहण का पठन करते हुए दी। थेरवाद परंपरा में तब तक केवल भिक्षुओं ने ही ऐसा किया था। यह इसलिए एक क्रांतिकारी कदम था। बर्मा में 1954 के वर्ल्ड फेलोशिप ऑफ बुद्धिस्ट के अधिवेशन

में उन्होंने सलाह दी कि प्रशिक्षित उपासकों को आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए जिससे वे धम्म के लिए समूचे रूप से कार्य कर सकें। भिक्षुओं पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं थी। सर्वप्रथम यह बहुत महत्त्वपूर्ण था कि संघ के सदस्य सही ढंग से प्रशिक्षित हों। वे धर्मनिरपेक्ष विषयों एवं धम्म दोनों में प्रशिक्षण लें। धम्म प्रशिक्षण का अर्थ यह नहीं कि वे केवल धम्म का अध्ययन एवं धम्म की समझ रखें बल्कि परिणामकारक आचरण भी करें -अर्थात अकुशल मानसिक अवस्थाओं का त्याग और कुशल मानसिक अवस्थाओं का विकास। अगर ऐसे लोग एक दूसरे के सम्पर्क में रहें वे एक प्रकार के आदर्श समाज का गठन करेंगें, दूसरों के लिए उदाहरण बनकर और यह दर्शाते हुए कि कैसे उत्तम ढंग से जीया जा सकता है। इस तरह त्रैलोक्य बौद्ध महासंघ डा. बाबासाहब अम्बेडकर की संघ की कल्पना के बहुत निकट है। त्रैलोक्य बौद्ध महासंघ में पुरूष या स्त्री शरण गमन से ही विकसित माना जाता है, जरूरी यह नहीं कि उसने समय कितना बिताया है, लेकिन आचरण, प्रतिबद्धता एवं अनुभव महत्त्वपूर्ण है। कल्याण मित्रता के बारे में भगवान बुद्ध ने भिक्खु आनंद के याचना कर पुछे जाने पर बताया की कल्याण मित्रता सम्पूर्ण धम्म जीवन है। तथा कल्याणमित्रता ही ऊँचे अर्थों में वास्तविक मित्रता है। धम्म में ऐसे मित्र का मिलना कईयों को अधिक संतोष देता हैं।

सन् 1978 अगस्त में धम्मचारी लोकमित्र, कुलरत्न और पदमवज्र के साथ भारत में दोबारा आये। और पुना में त्रिरत्न आंदोलन का निर्माण किया तथा इस आंदोलन को गति प्रदान करने हेतु सन् 1967 के बाद सन् 1979 फरवरी में संघरक्षित की पहली भेंट के लिए तैयारी शुरू की। उन्होने कई मोर्चों पर कार्य किया। पहले उन्होने पुणे में जगह-जगह जाकर बौद्ध समुदायों में भाषण दिया। भंते संघरक्षित जाते हुए भारत में 12 नए धम्माचारी दे गए। पूना में 10 तथा अहमदाबाद में 2 अब वे धम्म कार्य के किए बस अपने ही सहारे थे।

सन् 1980 में दापोडी में महाविहार का उद्धघाटन आंदोलन को आगे बढ़ने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। वह ना केवल सुंदर था बल्कि धम्म के साथ सजीव भी था, वह एक उदाहरण था पूरे महाराष्ट्र के लोगों के लिए। सन् 1990 में दापोड़ी को इस धम्मक्रांति के आंदोलन का मुख्य केंद्र बनाया गया। सबसे पहले पुणे में येरवड़ा, दापोड़ी, पिपरी में केंद्र खोले गए। इसके पश्चात पुणे के नजदीक लोनेवाला के पास भाजा केंद्र खोला गया। तथा औरंगाबाद, मुंबई, उल्लासनगर, कोल्हापुर, सोलापुर, में शिविर केन्द्रो की स्थापना किया गया। महाराष्ट्र में भाजा, बोरधरण धम्मशिबिर केन्द्र पर ध्यान- साधना होता है। और वहाँ वर्षभर अलग-अलग प्रकार के शिबिर लगाये जाते है जिससे धम्मसहाय्यक, धम्ममित्र और धम्मचारियों के लिये शिबिर होते है।

लोकमित्र जी सन् 1998 में महाविहार स्थित कार्यालय को छोड़ कर आंदोलन के विकास के लिए धम्मचारी लोकमित्र ने मैत्रयनाथ, तथा मणिधम्म के साथ मिलकर जम्बुद्वीप ट्रस्ट की शुरूआत की तथा माणुसकी और नागलोक का निर्माण किया। इस आंदोलन का विकास भारत में विशेषत: महाराष्ट्र में बहुतही तेजी से हुआ। आज महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, गोवा, केरल,आंध्र प्रदेश, ओड़ीसा, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में अनेक धम्म केन्द्र कार्य कर रहे है। भारत की सामाजिक स्थिति की और आवश्यकताओं के अनुसार आंदोलन की सामाजिक परियोजनाओं द्वारा सामाजिक कार्य चलाया जाता है। जिसमें चिकित्सा केन्द्र बालविहार, बालसदन, छात्रावास आदि द्वारा कार्य किया

जाता है। भारत में त्रिरत्न ग्रंथ और सीहनाद ये दो प्रकाशन विभाग है। बुद्धयान का प्रकाशन 'सीहनाद' द्वारा किया जाता है। शेष सभी पुस्तके त्रिरत्न ग्रंथमाला द्वारा प्रकाशित की जाती है। धम्म केन्द्र व सामाजिक परियोजनाओं में पूर्णकालिक कार्य करने वाले अनेक धम्मचारी है। कुछ धम्मचारी अपनी निजी नौकरी, परिवार की देखभाल के साथ धम्मप्रचार का कार्य करते है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकमित्र जी एशिया देशो में सबसे पहले ताइवान, मलेशिया, कोरिया,चीन,जापान,श्रीलंका आदि का भ्रमण किये तथा आइनेब के (INEB का पूरा नाम International Network of Engaged Buddhists है) माध्यम से बाबा साहब डॉ॰ भीमराव अंबेडर जी ने जो 14 अक्तूबर सन 1956 को दीक्षा भूमि नागपुर में जो धम्मक्रांति कि थी उसका नेतृत्व विश्व स्तर पर कर रहे है अर्थात भगवान बुद्ध एवं बाबासाहब के विचारों और उनके कार्यो को विश्व के 25 देशों तक पहुंचाने का कार्य कर रहे है तथा बाबासाहब के अनुयाई को लोकमित्र एवं सहयोगीयो द्वारा विपरीत परिस्थितियो में भी धम्म अभ्यास एवं कार्य कैसे करते है यह बताने और सीखाने का कार्य कर रहे है। परम पावन दलाई लामा (तिब्बत), आदरणीय तिक न्हात हन्ह (फ्रांस/वियतनाम), आदरणीय महा सोमचाई कुलसचित्तो (सियाम), आदरणीय भिक्षुणी चाओ हेवी (Hwei) (ताइवान) हैं। आदरणीय एस॰ के॰ थोराट आदि गणमान्य ने नागलोक को अपनी भेट दी है तथा धम्मचारी लोकमित्र से घनिष्ठ मित्रता है।

धम्मचारी लोकमित्र जी को दक्षिण कोरिया के शांति पुरस्कार से 12 अगस्त, 2008 को सम्मानित किया गया था। इस पुरस्कार को दक्षिण कोरिया का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार के रूप में माना जाता है। 15 अगस्त, 2008 को अपने कोरिया प्रवास के दौरान कोरियन भाई साँग-जीन को धम्ममित्र की दिक्षा देकर कोरिया में त्रैलोक्य बौद्ध महासंघ सहायक गण की पहली धम्ममित्र दीक्षा विधि की शुभ आरंभ किया। और श्रीलंका के सेवालंका नामक संस्था ने सन 2008 में धम्मचारी लोकमित्र जी को "धम्म सेनापती" पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। तथा पुणे के एक गैर-सरकारी संस्था (एनजीओ) ने सन 2015 जनवरी में धम्मचारी लोकमित्र जी को "धम्मभूषण" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अतःउपरोक्त वर्णन से हमें यह ज्ञात होता है कि धम्माचरी लोकमित्र जी भगवान बुद्ध एवं बाबा साहब डॉ॰ भीमराव अंबेडकर के दिये धम्म मार्ग को गहराई से समझे और विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे सकारात्मक कार्य करना चाहिए कुशल बातों को अपना कर हम अपने जीवन में किस तरह परिवर्तन कर सकते है। यह सम्पूर्ण विश्व के सामने एक आदर्श उदाहरण रखा है। इन्होंने 1979 में भारत में त्रैलोक्य महासंघ की स्थापना भारत में की है। तब से आज तक वें बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार हेतु और प्रमुख रूप से प. पू. बोधिसत्व डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के अनुयायियों के बीच में धम्म का कार्य कर रहे है। भारतीय बौद्ध धम्म के आंदोलन में उनका सराहनिय अविस्मरणीय योगदान है। नागलोक के माध्यम से वे सन 1995 से कार्य कर रहे है और उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन "प्रबुद्ध भारत" के निर्माण हेतु समर्पित किया है लोकमित्र जी पिछले 39-40 वर्षो से कार्यरत है।